—स्व० पंडित हरिशरण

बाइबिल के पैगम्बर चोर !

चोरों से सावधान !

झूठ, पाखंड और जालबाजी के आधार पर आज ईसाई विश्व-विजय, करना चाह रहे हैं, पर पहले वे अपने को तो टटोलें कि वे क्या हैं ? क्या संसार को अपने जैसा बनाकर सभी कुछ नष्ट कर देना ही उनका लक्ष्य है ?

आप ही सोचिए कि क्या आप चोरी का उपदेश देने वालों का साथ देना पसन्द करेंगे।

—संपादक

उपर्युक्त शीर्षक को पढ़ कर पाठकगण चौंक पड़ेंगे। लेकिन यह शीर्षक मेरा नहीं अपितु स्वयं बाइबिल का बताया हुआ है। बाइबिल एक ऐसी पुस्तक है ईसाई जिसके ईश्वर प्रेरित पुस्तक होने का दावा करते हैं। ईसाइयों को विश्वास है कि इसके प्रत्येक वाक्य में सत्यता कूट-कूट कर भरी हुई है। ईसाइयों ने इसके प्रचार में कोई कसर नहीं उठा रक्खी। इसकी लाखों प्रतियां बिना मूल्य बांटकर जनता में यह मिथ्या विचार प्रसारित किया जा रहा है कि ईसा पर विश्वास लाये बिना मोक्ष प्राप्ति असम्भव है। आज ईसाई मिशन भारतीयों को ईसाई बनाने में जितना धन व्यय कर रहे हैं, यदि उसका हिसाब लगाया जाय तो प्रत्येक भारतीय पर सहस्रों रुपया बैठता है। मैंने भी यह सोचकर कि जब ये ईसा को ईश्वर पुत्र और बाइबिल को ईश्वर प्रेरित मानते हैं तो क्यों न मैं भी सत्यासत्य का निर्णय करूं। इन भावनाओं से प्रेरित होकर मैंने इलाहाबाद से प्रकाशित हिन्दी बाइबिल का

अध्ययन प्रारम्भ किया। सच कहता हूं कि मैंने इस ग्रन्थ में एक नहीं, अनेकों जगह ऐसी-ऐसी बातें पाईं, जिसे मूर्ख, गंवार से भी गंवार व्यक्ति व ईश्वरकृत तो दूर रहा अनुष्यकृत भी न मान सके। फिर भी जब मैं पढ़ते हुए 'यूहन्ना रचित सुसमाचार' पर्व १० पद ६ पर पहुंचा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वहां पर लिखा था कि 'जितने मेरे आगे (पहले) आए सब चोर और डाकू थे' आजकल की छपी पुस्तक में इस प्रकार है 'जितने मुझसे पहले आये वे सब चोर डाकू हैं। ये वचन उस ईसा के हैं जिस पर आज सारा ईसाई जगत् अभिमान करता है। इस वाक्य से ईसा के पूर्व के लाखों मनुष्य चोर और डाकू तो ठहरे ही पर ईसा की मां मरियम, ईसा का बाप यूसुफ, ईसा का गुरु युहन्ना, इब्राहिम के वंशज इस्राइल, दाउद आदि तथा ईसा से पूर्व आनेवाले सभी भविष्यवक्ता एवं पुराने धर्मशास्त्र के ३६ लेखक सारे चोर और डाकू सिद्ध हुए।

ऐसे चोरों और डाकुओं की लिखी पुस्तक को ईसाई ईश्वरकृत या प्रामाणिक मान सकते हैं! हमने 'सच्चा मसीही धर्म क्या है? नामक ट्रैक्ट (मिशन की ओर से प्रकाशित) में पढ़ा था कि लेखक को जब किसी प्रश्न का उत्तर न आया तो उसने ऊपर स्वर्ग की तरह मुंह करके उत्तर दिया। हम उन सभी पादरियों से पूछना चाहते हैं कि क्या ईसा के पहले आये हुए मूसा आदि पैगम्बर चोर नहीं थे? यदि थे तो वे पुराने नियम क्यों प्रामाणिक मानते हैं? और वे चोर थे तो कैसे चोर थे? यदि चोर डाकू नहीं थे तो क्यों ऐसे वाक्यों को बाइबिल से नहीं निकालते? क्या इसका उत्तर स्वर्ग की तरफ मुंह करके भी दे सकते हैं?

अरे ईसाइयों के ईश्वर ईसा! क्या तेरा हृदय न पसीजा? क्या तेरे दिल में दर्द न हुआ जो तूने अपने मां-बाप यहां तक कि बपतिस्मा देने वाले गुरु एवं बाइबिल के पूर्व भाग की रचना करने वाले जिसमें नबी मूसा भी था उन सबको तूने चोर और डाकू बतलाया। यही तो कारण है कि तुझे फांसी पर चढ़ाया गया।

वास्तव में बात यह है कि 'पीलिया के रोगी को सारा संसार पीला ही पीला नजर आता है' और इसी तरह 'सावन के अन्धे को सारा संसार हरा ही हरा दिखता है,। आप कहोगे कि क्या ईसा को भी यही रोग था? तो मैं कहता हूं कि था और वास्तव में था।

होता था। वाइविल में लिखा है कि उस जमाने में केवल गदहे का सिर ६० रुपये में बिकता था, देखिए राजाओं की पुस्तक नं० २ अ० ६ प० २५। आप सारे ईसा के जीवन चरित्र को देख जाइये, कहीं पर भी गदहे के सिवाय किसी की सवारी ईसा ने की हो ऐसा न पायेंगे। उस समय गदहे की चोरी आजकल की मोटर की चोरी के समान है। इस चोरी की घटना के तीनों सुसमाचार साक्षी हैं (१) लूका १६.३०, (२) मति २१.२ (३) मार्क ११.२, तो क्या इन गदहों को चुराने वाले चोर और चुराने वाला चोरों का सरदार न कहलायेगा? इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि ईसा स्वयं चोरों का सरदार था और उसके चेले चोर थे।

ईसा की मौत का कारण

फिर वे यरूशलम में आये, 'और वह मन्दिर में गया और वहां जो लेन-देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा और शरीफों के फट्टे और कबूतर बेचने वालों की चौकियां उलट दीं। और मन्दिर में से होकर किसी को बरतन लेकर आने जाने न दिया। (मरकुस ११.१५,१६)।

यह मन्दिर में डाका डाला जिससे सामान हाथ लगा। जब वहां सर्राफ थे तो धन की कमी कैसे रह सकती है। कोई सामान कोई लेकर बाहर न जाय इस आदेश से साफ पता चलता है कि यह दिनदहाड़े जैसे डाके पड़ते हैं इसी तरह खुले बाजार में ईसा ने अपने शिष्यों के साथ हमला करके लूट लिया। आगे वर्णन मिलता है कि लोग उससे डरते थे अतः किसी ने कुछ न कहा लेकिन उसके नाश का अवसर ढूंढ़ते रहे। आज भी संसार में लोग डाकू तथा उसके सरदार से भयभीत होते हैं। उसी तरह उस समय ईसा से डरते थे। अतः इस लूट में कोई कुछ न बोल सका।

ईसा के शिष्यों का चोरी करना

अब लीजिए, ईसा के सामने ईसा के शिष्य चोरी करते हैं और ईसा मना नहीं करता—'सब्त के दिन ईसा खेतों में से जा रहा था। उसके शिष्य भूखे होकर बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे, (लूक ६-१-२), (मति १२-१-२) (मार्क २-२३-२४) अब आप ही सोचिए एक गरीब किसान गर्मी-सर्दी की परवाह न करता हुआ अपना खून पसीना एक करके खेत में गेहूं बोता है और ईसा के शिष्य जो सत्तर-सत्तर की संख्या में थे (लूक १०-१-२) उस खेत के बाल (गेहूं) के यदि प्रत्येक सेर भर भी खाये तो बताएं कि कितना अन्न उस किसान का खराब हुआ होगा। सेर भर तो खाया होगा और जो बिखेरा कितना

होगा, वह अलग रहा। क्या इस तरह से बिना पूछे दूसरों के खेतों से अन्न खाना चोरी नहीं? जब किसान ने अपने खेत की हालत देखी होगी तो सिर पटक कर रोया होगा। दूर से तो उसे मालूम भी न पड़ा होगा कि खेत किसी पशु ने उजाड़ा है या मनुष्यों ने। पास में जाने के बाद देखा होगा कि इस तरह तो मनुष्य ही खा सकते हैं। पशु तो ऐसे नहीं खाते। यदि उसे पता चल जाता तो ईसा और ईसा के चेलों को मार-मार कर उनका भुर्ता बना डालता। आज भी यदि स्कूल के छात्र अपने अध्यापकों के साथ घूमने जाते हैं तब यदि किसी के खेत में छात्र घुस जायें तो अध्यापक दंड देता है। पर यदि अध्यापक ही चटोरा हो तो मना करना तो दूर रहा अपने खाने के लिए भी मंगाता है। ईसा ऐसा ही अपने चेलों का गुरु था। गुरु नहीं अपितु चोर और चोरों का सरदार था। मैं पादरियों से पूछना चाहता हूं कि जिस ईसा के चमत्कारों का वर्णन करते हुए तुम लोग आकाश में हवाई किले बांधते हो और भोलीभाली जनता की आँखों में धूल झोंकते हो तथा इस चमत्कार का बड़े अभिमान के साथ वर्णन करते हो कि ईसा ने ५ रोटियों और २ मछलियों से ५ हजार मनुष्यों को पेट भर भोजन कराया और अन्त में बारह रोटियां बचीं रही (लूका रचित सुसमाचार ११-६-१७) जब तुम्हारा ईसा इतना जादूगर था तो क्यों न यहां अपने शिष्यों को भोजन खिलाया? जो शिष्य भूखे होकर बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे! या ईसा यहां जादू का पिटारा भूल गया था? जिस ईसा ने अंधों को आंखें दीं, बहरों को सुनने की शक्ति दी, लूलों को हाथ दिए, लंगड़ों को पैर दिए, कोढ़ी आदि प्रत्येक प्रकार के व्यक्तियों को हाथ लगाने मात्र से चंगा कर दिया, समुद्र के हिलोरों को धमका कर थमा दिया। यहां तक कि मुर्दों को स्पर्शमात्र से जिला दिया, ऐसे बड़े भारी चमत्कार दिखाने वाले का चमत्कार इस समय आकाश में सैर कर रहा था या पाताल में चला गया था अथवा फिर समुद्र में गोते खा रहा था मानो भांग के नशे के चूर था! वास्तव में ये करामात कपोल कल्पित हैं। ये सब असम्भव बातें हैं लेकिन ऐसे चोरों के सरदार के लिए तो सर्वथा सम्भव है।

ईसा के शिष्य का दान दी हुई चीजों को चुराना

ईसा ने जब अपने शिष्यों को दूसरों की चीज चुराना सिखाया तब क्या ये अपने साथियों की चीजें न चुराते? ईसा का एक शिष्य था जिसका नाम यहूदा इस्करियोती था, जिसने ईसा को पकड़वाया था। वह चन्दे की थैली रखा करता था और उस थैली में भक्तजन जो डालते, सो उठा लेता था।

उसका सर्वदा का यही काम था। इस बात को स्वयं ईसा ने स्वीकार किया है। देखिये (यूहन्ना १२-६) दान दी हुई भक्तजनों की सम्पत्ति को चुराना क्या कम अपराध है?

ईसा का गधे को चुराना

जैसे गुरु वैसे शिष्य-यह कहावत झूठी नहीं है। जब स्वयं ईसा चोरी करता था तब शिष्य क्यों न चोरी करें? ईसा एक चरते हुए गधी के बच्चे को पकड़ कर उस पर चढ़ बैठा। (यूहन्ना १२.१४) क्यों महाराज चरते हुए किसी गरीब के गधे के बच्चे को पकड़ कर उस पर बैठ कर जाना क्या धर्मात्मा का काम है? दुनिया तो देख कर कह रही है कि राजा गधे पर बैठ कर आ रहे हैं (यूहन्ना १२।१५) उन्हें क्या मालूम कि यह राजा नहीं यह तो चोर है। धन्य है ईसा, चोरी करके गधे की सवारी करना और जनता की आंखों में धूल झोंककर अपने को राजा कहलवाना चाहता है। यह सर्वथा असम्भव है। किसी कवि ने कहा है—

सचाई छिप नहीं सकती कभी झूठे उसूलों से।
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से॥

चाहे पादरी लोग कितना भी ईसा के पाप पर पर्दा डालना चाहें पर सत्यता कभी छिप नहीं सकती। कहां इनके पूर्वजों ने उपदेश दिया था कि अपने पड़ोसी की स्त्री, दास-दासी, उनके बैल और उनके गधे और किसी वस्तु जो तेरे पड़ोसी की है, लालच मत कर (विवाद की पुस्तक पर्व ५ आयत २१) और कहां उनको चोर बतलाकर स्वयं चोरी करने वाले ईसा हजरत ये हैं। ईसा का इतिहास जिस पर पर्दा डाल कर ईसाई लोग भोलीभाली जनता को बहका रहे हैं। मैं ईसाई पादरियों को चैलेन्ज (चुनौती) देना चाहता हूं कि यदि वे सचमुच ईसा को धर्मात्मा मानते हैं तो इसका उत्तर देने का कष्ट करें।

खैर, अब तक तो ईसा की ही चोरी आपने पढ़ी। अब आप यह भी पढ़ेंगे कि ईसाइयों का खुदा (ईश्वर) भी चोरी करने की आज्ञा देता है। 'जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ निकलोगे वरन तुम्हारी एक-एक स्त्री अपनी-अपनी पड़ोसिन और अपने-अपने घर की पाहुनी से सोने-चांदी के गहने और वस्त्र मांग लेगी और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिराना; इस प्रकार तुम मिस्त्रियों को लूटोगे। (निर्गमन ३.२१-२२) आप पूरे प्रकरण को

पढ़ें तो आप को ज्ञात हो जायेगा कि खुदा स्वयं चोरी करने की आज्ञा देता है। जब स्वयं ईश्वर आज्ञा दे तो उसके बेटे व उपासक क्यों चोरी न करेंगे ! और इनके खुदा (ईश्वर) का बेटा जब आता है। (मति २४.४२,४३) जब ईश्वर (खुदा) सर्वव्यापक हैं तो आता कहां से है ? और जो आता है वह भी किसी विशेष जगह में रहता है ! और चोरों की तरह वह आता है जिसे किसी का डर हो ! बताओ खुदा को किसका डर है ? कृपया पादरी लोग इसका उत्तर देने का कष्ट करें।

★
